गोवा विश्वविद्यालय

शणै गायेंबाब भाषा और साहित्य महाशाला

हिंदी अध्ययन शाखा

भाषा और साहित्य : सामाजिक एवं सांस्कृतिक सर्वेक्षण

नाम :- फ़ातिमा शेख

कक्षा :- एम. ए. प्रथम वर्ष

अनुक्रमांक :- 23P0140006

विषय :- नाउशी गाँव में किया गया सर्वेक्षण

GOA UNIVERSITY TALEIGAO PLATEAU GOA

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ क्र.
1	प्रस्तावना	1 - 3
2	सर्वेक्षण क्या है?	4
3	नाउशी गाँव का परिचय	5 - 6
4	नाउशी गाँव की जन संख्या	11
5	सर्वेक्षण (रपट?	12 - 15
6	शिक्षा	17 - 18
7	हिंदी भाषा का ज्ञान	19 - 20
8	सामाजिक समस्या	21 - 23

9	सांस्कृतिक परिवेश	24 - 25
10	व्यवसाय एवं आर्थिक स्थिति	27
11	गाँव के लोगों की अपेक्षाएँ	28
12	निष्कर्ष	29

प्रस्तावना

हमारे पाठ्यक्रम में सामाजिक सर्वेक्षण यह विषय लगा हुआ है और इस सामाजिक सर्वेक्षण के लिए हमने **नाउशी** गाँव का चयन किया था। इस गाँव में सर्वेक्षण के दौरान हमें जो अनुभव प्राप्त हुआ वे अनुभव हमारे लिए मूल्यवान हैं। वैसे हम हमारे जीवन में इतने व्यस्त होते हैं कि हमे अपनी दुनिया से हटकर कभी दूसरों के जीवन में क्या चल रहा है उनकी समस्याओं से कभी परिचित नहीं हो पाये। परंतु इस विषय के चलते हमे दूसरों के जीवन, उनके विचार, संस्कृति के बारे में जानने का मौका मिला।

हम हमारे पाठ्यक्रम के वजह से इतने व्यस्त रहते हैं की हमे अपने लिए भी वक्त नहीं जुटा पाते, नाहीं अपने परिवार के लिए वक्त निकाल पाते हैं और इसी के चलते कहीं बाहर जाकर कुछ करना सम्भव नहीं था। लेकिन इस विषय के चलते हमे मौका मिला की हम बाहर जाकर लोगों के बीच उनसे संवाद साध सके।

अंजान लोगों के बीच जाकर उनसे गाँव के और उनके बारे में जानकारी प्राप्त करना हमारे लिए आसान न था। जब हम वहाँ गये तब हमारे सबके मन - मस्तिष्क में एक ही सवाल बार बार उठ रहा था कि वे हमे अपना पुरा संयोग देंगे या नहीं , हमारे प्रश्नों के उत्तर देंगे या नहीं, हमसे अच्छी तरह से बात करेंगे या नहीं। आदि बहुत से प्रश्न मेरे और मेरे साथियों के मन में कुद रहे थे। मैं बहुत उत्साहित थी इस सर्वेक्षण के लिए क्योंकि कभी ऐसा कार्य मैंने नहीं किया था और मेरे लिए यह पहला अनुभव था। इस सर्वेक्षण के लिए हमने एक दिन पहले ही अपने प्रश्न तैयार किये थे। हमारे लिए यह पहला अनुभव था तो हमे पता नहीं चल रहा था की क्या करे, कैसे सवाल पूछे।

गाँव के बारे में हमारे मन में पहले से ही एक छवि विद्यमान थी की गाँव यानी जहाँ छोटे - छोटे घर होंगे, एक जुट परिवार, बिजली और पानी की समस्या, बेरोज़गारी का जीवन आदि - आदि । परंतु जिस गाँव में हमने सर्वेक्षण किया था वह थोड़ा बहुत विकसित था। **4 अप्रैल 2024** को शुरू किया गया सर्वेक्षण अनुभवों से भरा हुआ था। वहाँ पहुँचते ही जब हम पहले घर में गये हमने उनको अपना परिचय दिया। और हम किस कारण वहाँ आये हैं इसके बारे में बताते हुए हमने हमारे बनाये गये प्रश्न पूछने की शुरुआत की। उन्होंने हमे पुरा सहयोग दिया और हमारे मन में जो भय था कि वे हमें अपना सहयोग देंगे या नहीं वह भी ख़त्म हुआ और हमारा आत्मविश्वास बड़ा की हम यह कर सकते हैं।

उस गाँव के व्यक्ति ने हमे बहुत सी बातें बताई गाँव को लेकर, उनकी समस्याएं, संस्कृति के बारे में। वैसे **नाउशी** गाँव में बिजली पानी, राशन तरकारी की, यातायात की, नेटवर्क की ऐसी बड़ी कोई समस्या नहीं थी। उनके सामने सिर्फ एक ही बड़ी समस्या थी कि गाँव में **मरीन बे** इस परियोजना का आना। अगर यह परियोजना गाँव में आया तो लोगों के जीवन में उथल - पुथल मच जायेगी। वहाँ उस गाँव में ज्यादातर लोग मछवारे हैं और उनका जीवन उसी पर चलता है। यदि हमसे कोई हमारे जीने का एकमात्र साधन छिन ले तो हम बहुत ही तकलीफों से गुजरते हैं , हमारे आर्थिक स्थिति में भी बदलाव आने लगते हैं। वैसा ही हाल इन गाँव के मछवारों का है। उन्होंने बड़ी मेहनत से यह सब संभाल है और रोज सुबह जल्दी उठकर अपने काम लग जाते हैं ताकि उनके परिवार वालों को दो वक्त की रोटी नसीब हो सके।

अपना बना बनाया काम इस तरह नष्ट होता कोई नहीं देख सकता। यहाँ तक की इस परियोजना के बारे उन गाँववालों को कुछ नहीं बताया गया। अगर यह परियोजना सफल हुई तो उनके मकान भी उनसे छिन सकते हैं ऐसा हमे बताया गया। वैसे तो वहाँ 80-90% लोग सरकारी कर्मचारी हैं तो उन्हें कुछ ज्यादा तकलीफ नहीं उठानी पड़ेगी लेकिन उन लोगों का क्या जो केवल एक ही काम पर

निर्भर हैं। इस पूरे सर्वेक्षण में यही प्रश्न बार - बार मेरे मन मैं खलबली मचा ते रहे। आगे हमे वहाँ के संस्कृति के बारे में पता चला, शिक्षा के बारे में आदि कई बातों ने हमारा ध्यान केंद्रित किया। उन व्यक्ति से हमने बहुत सारी जानकारी हासिल जो आगे जाकर हमे उससे बहुत सहायता प्राप्त हुई।

और यही से हमारा सर्वेक्षण शुरू हुआ और हमने ऐसे ही अन्य घरों में भी जाकर अपने प्रश्न पूछे और उनका संयोग भी हमे प्राप्त हुआ।

सर्वेक्षण क्या है?

सर्वेक्षण को शोध उपकरण कहाँ जाता है, जहाँ पर हम पहले ही कुछ प्रश्न तैयार करते है और किसी गाँव या शाळा हो या कोई संस्था वहाँ जाकर हम जो पूर्व प्रश्न बनाते है और उसी के आधार पर उसने वे प्रश्न पूछे जाते है ताकि उनसे हम कुछ जानकारी प्राप्त कर सके जो हमारे लिए जरूरी हो और जिससे हमें कुछ सीखने का मौका मिले।

नाउशी गाँव का परिचय

नाउशी गाँव, नाउशी गाँव की सुंदरता वहाँ के समुद्र तट के वजह से और भी ज्यादा आकर्षित और मनमोहक लगती है। वहाँ की शुद्ध हवा मन को भा जाती है। नारियल के पेड़ों से भरा यह समुद्र तट का सुंदर दृश्य अपनी और आकर्षित करता है। जब हम इस गाँव में पहुँचे तो सबसे पहले हम इसी समुद्र तट के पास ही रुके। देखते ही भा गया था हमे यह तट। सच में क्या दृश्य था वह, मन को लुभावने वाला, एकदम शांत वातावरण। यहाँ मछवारे सुबह - सुबह आकर लगभग 7-8 बजे के आसपास मछली समुद्र तट से निकालते हैं और अपना दाना पानी उसी से चलाते हैं।

नाउशी गाँव में दो मंदीर देखने को मिलते हैं। एक बेताळ ओर दूसरा केळबाय। इस गाँव की खासियत यह है की यहाँ के सांस्कृतिक कार्यक्रम जैसे **धालो** में स्त्रियों के जगह पर **आदमी** धालो खेलते हैं जो कहीं पर भी खेला नहीं जाता, और ऐसे ही **जगोर**, **शिगमो** जैसे त्यौहार बड़े उत्सव के साथ इस गाँव में मनाये जाते हैं। **होली** खेलने की भी उनकी अपनी एक परंपरा है। वे होली रात को खेलते हैं।

हमारे भारत को 1947 में अंग्रेज शासन से आज़ादी मिली थी परंतु गोवा को पोर्तिगालों के शासन से आज़ाद होने के लिए 14 साल लगे, और 1961 में गोवा मुक्त हुआ। लेकिन इन 14 सालों में सभी वाक़िफ़ हैं कि पोर्तिगालों ने क्या - क्या जुल्म किये थे। लोगों के जबरदस्ती धर्म बदले गये थे। उन्हें ईसाई धर्म अपनाने के लिए मज़बूर किया गया था। इसी कारण आज भी उनके रहन - सहन, भाषा आदि में पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव देखने को मिलता है। सर्वेक्षण के दौरान हम अनेक

लोगों से परिचित हुए जिनके कुलनाम ईसाई धर्म के थे और जिन्होंने अभी तक वह कुलनाम बदले नहीं थे। हमे एक ही घर में दो - दो कुलनाम मिले, और जब हमने उनसे पूछा तब उन्होंने यह जवाब दिया की "यह अपना एक विश्वास होता है और अपनी मर्ज़ी होती है की हम अपना नाम या कुलनाम बदलना चाहते हैं या नहीं।"

यह गाँव पूर्णरूप से विकसित था, जहाँ सभी सुख सुविधाएँ थी। अस्पताल, विद्यालय आदि सबकी सोय उन्हें थी। गाँव में केवल एक ही बालवाडी थी और वहाँ जो एक शाला थी वह कई वर्षो पहले ही बंद हो चुकी थी।

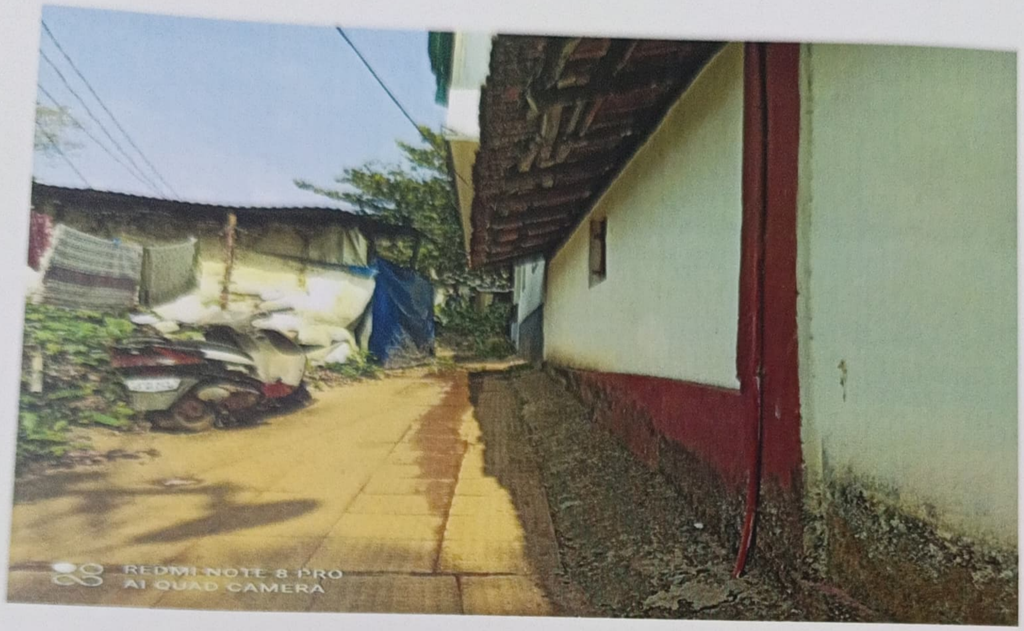

नाउशी

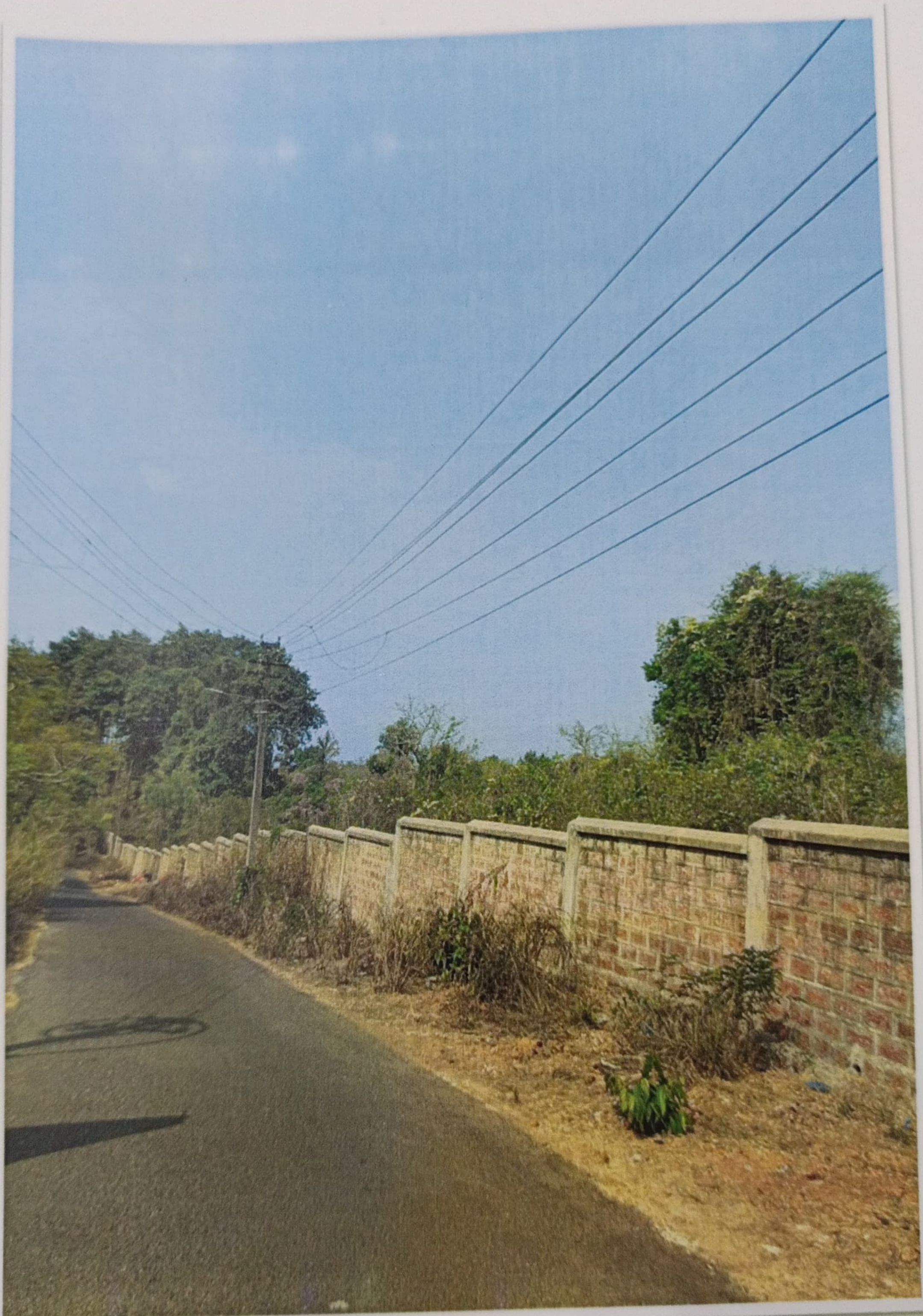

नाऊशी समुद्रतट

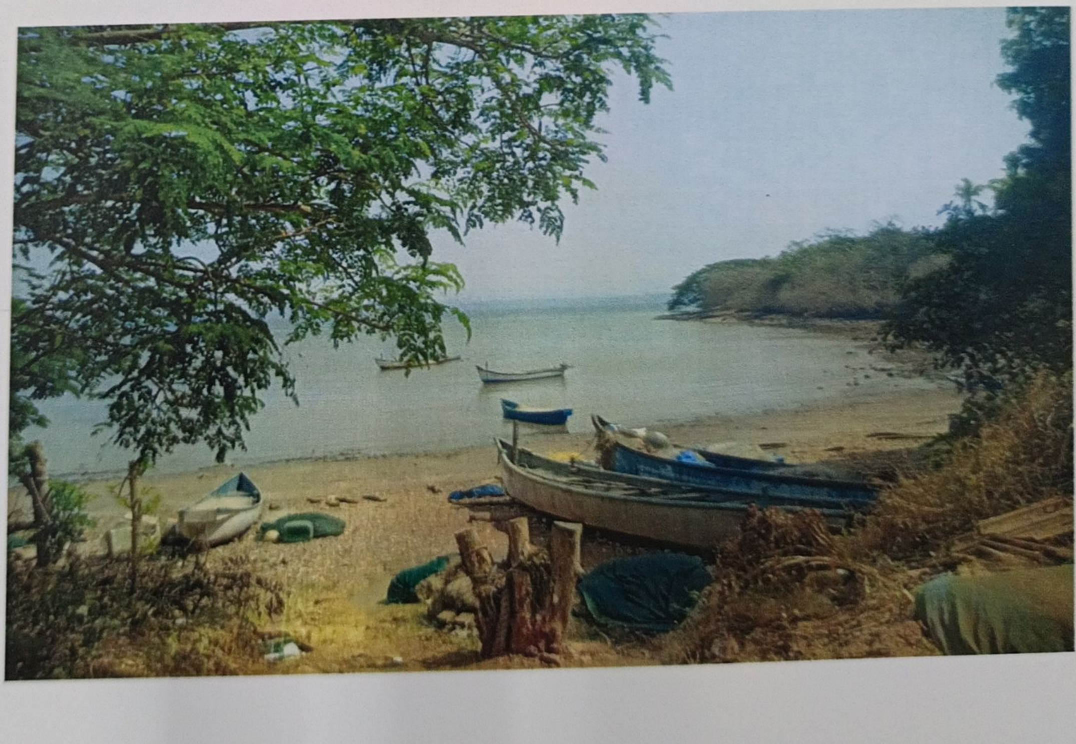

नाउशी गाँव की जनसंख्या

गाँव के हर एक व्यक्ति से पूछने पर उन्होंने बताया कि गाँव की कुल मिलाकर जनसंख्या लगभग 400-500 तक है।

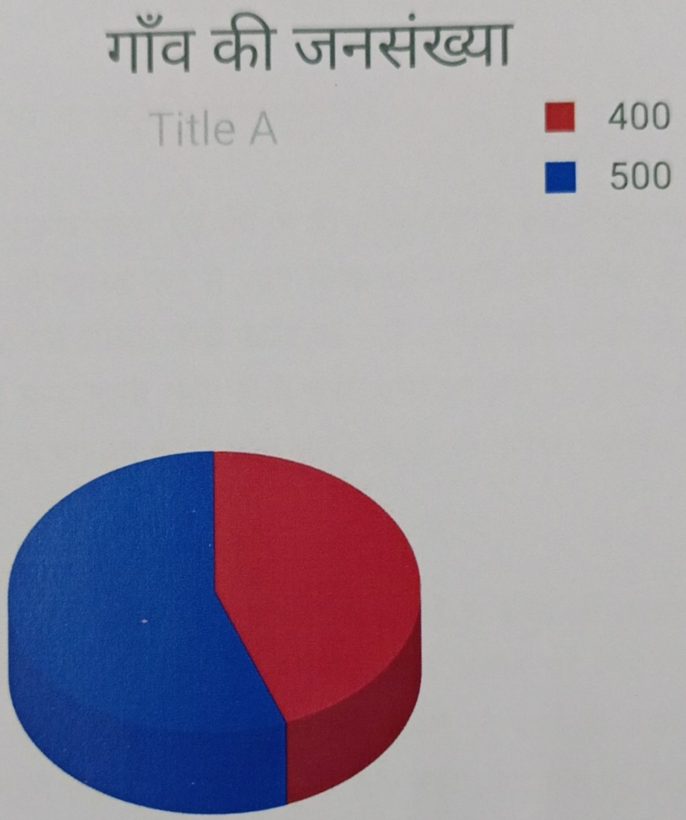

सर्वेक्षण (रपट)

इस सर्वेक्षण के लिए हमे तीन गटों (ग्रुप) में विभाजित किया गया था। हम कुल 11 विद्यार्थी थे इस सर्वेक्षण के लिए। हमने कुल मिलाकर 13 घरों के साथ बालवाडी का भी सर्वेक्षण हम सभी ने मिलकर किया। और फ़िर हमने अपने - अपने गटों के अनुसार भी सर्वेक्षण किया। मैंने कुल 2 घरों का सर्वे किया।

पहला घर था **सगुण काणकोणकर** का

सगुण काणकोणकर 67 वर्ष के हैं। उनके घर में कुल 8 सदस्य रहतें हैं। उन्होंने कभी औपचारिक रूप से कभी शिक्षा प्राप्त नहीं की बल्कि उन्होंने अपने आप से ही बोलना सिखा। उन्हें पढ़ना भी नहीं आता। उन्हें केवल अपनी भाषा का ज्ञान है परंतु अन्य दूसरी भाषा से वे उतने परिचित नहीं है। सगुण जी खुद पढ़े लिखे न होने के बावजूद भी उन्होंने अपने बच्चों को पढ़ाया लिखया, उन्हें काबिल बनाया।

सगुण काणकोणकर द्वारा हमे गाँव के बारे में बहुत सी जानकारी प्राप्त हुई। उन्होंने हमे अल्दिया गोवा रिजॉर्ट ने कैसे वहाँ के जमीन पर कैसे गैरकानूनी तरीके से वहाँ काम कर रहे हैं यह बताया। उनका जीवन भी बहुत ही संघर्षमय रहा है। फ़िर भी वे अपने हालातों के चलते कभी झुके नहीं , हर एक मुसिबतों का सामना डटकर किया। उनके छोटे बेटे के कमाई से ही उनका घर चलता है। भले ही किसका घर बाहर से अच्छा हो, ऐसा जरूरी नहीं की उनकी स्थिति भी उतनी ही अच्छी हो।

दूसरा घर था **ललिता हडकोणकर** का

उनकी आयु 80 वर्ष है। उनके घरमें कुल 8 सदस्य रहतें हैं। उनके 2 लड़कियाँ और 3 लड़के हैं। उन्होंने हमे बताया की अब उनके साथ केवल उनके सिर्फ बड़े बेटे हैं और उनके बाकि बच्चों की मृत्यु हो गयी। उन्होंने अपने जीवन में जो संघर्ष किया , वे किन - किन समस्याओं से गुजरी हैं यह सब उन्होंने बताया। अपने जीवन संघर्ष के बारे में बताते हुए उन्होंने हमे बताया कि वे घर से **कलापुर** इस गाँव तक चलके जाती थी खेतों में काम करने ताकि के अपने बच्चों का को भर पेट दो वक्त की रोटी खिला सके। उनके पति भी उन्हें बहुत तकलीफ़ें देते थे और उन्हें मारा भी करते। उनका संघर्षमय जीवन होने पर भी वे अपने फर्ज़ से चुकी नहीं। रात - दिन काम कर उन्होंने अपने बच्चों को शिक्षा देने की बहुत कोशिश की परंतु तंग हालातों के चलते वे अपने बच्चों को आगे न पढ़ा सकीं।

लेकिन उनके बड़े बेटे ने आगे चलकर अपनी पढ़ायी पूरी की और अब वे सरकारी कर्मचारी हैं। इस सर्वेक्षण के दौरान मैंने एक बात गौर किया की उनके बेटे रहते थे वही उस ही जगह परंतु अपनी माँ के साथ नहीं रहते थे। वे सब अलग रहते थे।

जब मैंने उनसे पूछा की **आई** अपने बच्चों को पढ़ने के लिए आपने बहुत कष्ट झेले होंगे, बहुत सारी कठिनाइयों से आपको गुजरना पड़ा होगा। यह वाक्य सुनते ही उनके आँखे भर आयी। वे कहने लगी जो **तुमने बात कही आज तक किसी ने यह नहीं कहा, सही कहा तुमने मैंने अपने पति का मार तक खाया है इनके लिए।** और उन्होंने बजे बड़े प्यार से अपना आशीर्वाद भी दिया।

बुरा लगता है जब हम देखते हैं कि जो माँ - पिता हमारे लिए इतना कष्ट उठाते हैं ताकि हमे कोई तकलीफ़ ना हो। उनसे ही हम मुह फेर लेते हैं, उन्हें

अपने आपसे दूर रखते हैं। जबकि यही उम्र होती उनकी सेवा करने की, उनको प्यार और इज्जत देने की।

तीसरा घर था **सोमनाथ काणकोणकर** जी का

सोमनाथ काणकोणकर की पढाई केवल दसवी तक हुई है। उनके घर में कुल 6 सदस्य हैं। सोमनाथ काणकोणकर सरकारी कर्मचारी हैं, और उनके बड़े भाई मछवारे हैं। उनका यह खांदानी व्यवसाय है।

सोमनाथ जी ने हमे गाँव में हो रही समस्या के बारे में बताया। उन्होंने हमे बताया की मरीना बे के वजह से गाँव के लोगों को क्या क्या तकलीफ़ों का सामना उन्हें करना पड़ेगा, विशेष रूप से मछवारों को क्योंकि उनका घर इसी के कमाई से चलता है। इसके चलते उन्हें सरकार से भी कोई मदत नहीं मिली और उन्हें इसकी अपेक्षा भी नहीं हैं की वे उनकी मदत करेंगे। उन्होंने ये भी बताया की पुरा गाँव एकजुट है इसलिए यह परियोजना अभी तक सफ़ल नहीं हो सकी है।

दूसरी उनकी समस्या थी **अल्दिया गोवा** जो एक आलीशान रिज़ॉर्ट है उसके चलते भी लोगों को परेशानी हो रही है। क्योंकि वहाँ पहले पहाड़ हुआ करते थे जहाँ काजु के पेड़ आदि हुआ करते थे उस नष्ट कर वहाँ यह रिजॉर्ट बनाया गया, और उनका उस जमीन पर अभी भी काम चालू है जो धीरे - धीरे गाँव के ओर बढ़ रहा है।

चौथा घर था **कुसुम बंदोडकर** का जिसका सर्वेक्षण मैंने किया था।

कुसुम बंदोडकर की उम्र 61 वर्ष हैं और उनके पति की आयु 68 वर्ष।

कुसुम जी ने केवल पाँचवी तक ही पढाई की है और उनके पति भी अशिक्षित है। इस पूरे सर्वेक्षण में मुझे केवल एक ही ऐसा घर मिला जिसमें सभी बेरोज़गारी में जी रहे थे। उनके पति के पास भी कोई काम नहीं था। उनके पति मछवारे हैं परंतु उनके पास नाव ना होने के कारण वे बेरोजगार रहे। कुसुम जी के 3 बेटे हैं और वो भी छोटे छोटे। सोच कर ही यह आश्चर्य होता है की कैसे उनका इस स्थिति में उनका घर चलता होगा, कैसे वे अपना और अपने बच्चों का पेट पालते होंगे।

ललिता आई

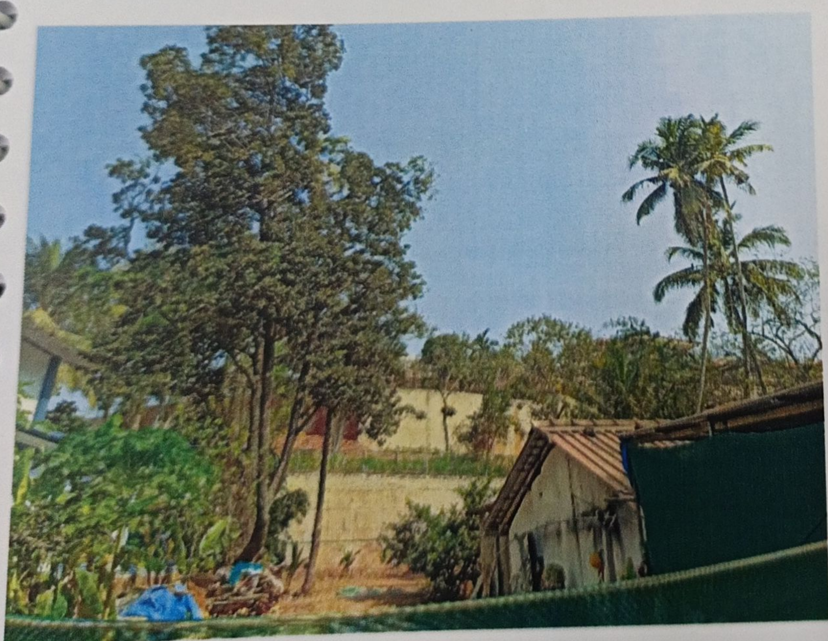

अल्दिया गोवा

शिक्षा

आज के इस आधुनिक जीवन के चलते हमारे जीवन में शिक्षा का स्थान अधिक बढ़ गया है। आज हम देख सकते हैं की शिक्षा से ही सब कुछ है। अगर आप पढ़े लिखे हैं तो ही लोग आपको इज्ज़त देते हैं। यदि कोई अगर शिक्षित वर्ग को कोई न पढ़ा लिखा, अनपढ़ व्यक्ति से सामना हो जाए तो वे उन्हें क्या क्या बोलने लगते हैं। परंतु उन्हें ये नहीं पता होता की अगर वे अशिक्षित हैं तो किस कारण के वजह से वे पढ़ लिख नहीं पाये। हर एक की अपनी मजबूरी होती है किंतु वे अशिक्षित होने पर भी अपने कर्तव्य से नहीं चुकते। वे नहीं पढ़ पाये किंतु वे अपने बच्चों जरूर पढ़ते हैं ताकि अपना सपना वे उनके द्वारा पुरा कर सके।

नाउशी गाँव में जब हम गये तब सर्वेक्षण के दौरान अधिकतर घरों में जाकर जब हमने सर्वे किया तब अधिकतर लोग जो थे वे अशिक्षित थे केवल आज के पीढी को छोड़कर, उनके माता पिता से लेकर उनके दादा - दादी तक सब अशिक्षित थे। उनसे हम जब भी कोई सवाल करते वे हमे केवल एक ही उत्तर देते की हम ज्यादा पढ़े लिखे नहीं है इसीलिए हमे ज्यादा कुछ पता नहीं है हम कुछ बता नहीं सकते। कई लोगों को कुछ समझ में न आते हुए भी आज के जमाने के साथ चल रहे हैं।

हम कहते हैं की शिक्षा है तो सब कुछ है। और यह सही भी है की शिक्षा के बिना हम अधूरे हैं, क्योंकि यदि हम पढ़े लिखे हैं तो समाज जो कुछ भी चल रहा है उसे अखबार या आदि इंटरनेट जैसी सुविधा द्वारा पढ़ कर अपने आप को सचेत रख सकते हैं और इतना ही नहीं तो दूसरों को भी हम बता सकते हैं की हमारे समाज में का घटित हो रहा है क्या नहीं। इस सर्वेक्षण के दौरान मुझे एक बात यह अच्छी लगी की वहाँ के अधिकतर लोग अशिक्षित होते हुए भी गाँव पर अगर

कोई भी मुसीबत आये तो एक साथ पुरा गाँव आये हुए मुसिबतों का डटकर सामना करते हैं।

पहले के जमाने में लोग शिक्षा को उतना महत्व नहीं देते थे, उन्हें लगता था की पढ़ने से क्या होगा, इससे हमे क्या हासिल होगा यह सोच थी लोगों की। परंतु आज जमाना बदल रहा है लोगों के मन में शिक्षण के प्रति अपनी मान्यताएँ बदल रही है। लोग आज शिक्षित हो रहे हैं और अपने आने वाली पीढ़ी को भी पढ़कर उनका भविष्य साकार कर रहे हैं।

इस सर्वेक्षण के चलते हमने वहाँ की बालवाडी का भी सर्वे किया। सरकार द्वारा जो नियम बनाये कि 3 साल होने पर बच्चों को स्कूल में दाखिला मिल सकता है, तो उसके कारण बालवाडी में बच्चों की संख्या कम हो गयी। वे वहाँ बच्चों को सब सुविधाएँ देते है। पौष्टिक आहार सब कुछ। परंतु अब इस नियम के चलते बच्चों की संख्या बालवाडी में कम होती जा रही क्योंकि अभी बच्चों के माता पिता उन्हें अंग्रेजी स्कूल में डालना ज्यादा पसंद करते हैं बजाए बालवाडी के।

हिंदी भाषा का ज्ञान

भाषा हमारे जीवन में बहुत ही महत्व पूर्ण होती है। भाषा से ही हम एक दूसरे के साथ संवाद अच्छी तरह से साध सकते हैं, अपनी बात दूसरों को समझा सकते हैं। जैसे की सब जानते हैं की हिंदी भाषा का प्रयोग अधिकतर क्षेत्रों में किया जाता है। हिंदी हमारी राष्ट्र भाषा है।

हिंदी भाषा सबसे अधिक जाननेवाली और अधिक क्षेत्रों में बोली जाने वाली भाषा है। कुछ ऐसे भी लोग हैं जो हिंदी से अच्छी तरह परिचित हैं। किंतु कुछ ऐसे भी लोग हैं जिन्हें हिंदी भाषा की ना तो समझ है और नहीं वे अच्छी तरह से बोल पाते हैं। सभी को अपनी मातृभाषा सर्वश्रेष्ठ लगती है और वे लोग अपनी भाषा को छोड़कर और कोई दूसरी भाषा के संबंध में कुछ जानना और समझना भी नहीं चाहते। परंतु हम देख सकते हैं की आज की युवा पीढ़ी में यह जोश जज्बा है कुछ नया सीखने की उसे समझने की। और आज सभी विद्‌यालयों में हिंदी पढाई जाती है जिससे आज के युवा पीढ़ी हिंदी बोल भी सकते हैं और समझ भी सकते हैं।

गाँव में सर्वेक्षण के दौरान जब हमने उन गाँव वालों से पूछा की उन्हें हिंदी भाषा का ज्ञान कितना है, वे इस भाषा को कितना समझ पाते हैं, कितना बोल सकते हैं। तब उन सबका एक ही उत्तर था की उन्हें अपनी भाषा **कोंकणी** को छोड़कर और कोई दूसरी भाषा नहीं आती। नाहीं वे पढ़ सकते हैं नाहीं बोल सकते हैं। पहले तो आश्चर्य हुआ की हिंदी तो सभी क्षेत्रों में बोली जाती है तो इन्हें क्यों नहीं आती होगी। किंतु वे पढ़े लिखे नहीं थे तो जाहिर सी बात थी की वे इस भाषा से परिचित नहीं होंगे, और उन्होंने सीखने की कोशिश भी नहीं की।

सभी को अपनी भाषा के अलावा दूसरी भाषा का भी ज्ञान होना आवश्यक होता है क्योंकि ऐसा जरूरी नहीं की जो भाषा मुझे आये वही भाषा सामने वाले को भी समझ में आये।

सामाजिक समस्या

गाँवों में रहने वाले लोगों को कई समस्याओं से गुजरना पड़ता है, जैसे की गाँव में बिजली, पानी या गाँव में आनी वाली परियोजना की समस्या लोगों को चिंता में डाल देती है। इन समस्याओं का समाधान मिलने में उनकी आधी उमर बीत जाती है परंतु उनकी समस्याएं ख़तम नहीं होती। गाँव में ज्यादातर समस्याएं तो पर्यावरण, नेटवर्क आदि की होती हैं और स्वच्छता भी एक समस्या हैं। अगर पर्यावरण स्वच्छ रहेता है तो हमारी सेहत भी उतनी अच्छी रहती है। गाँव के लोगों को इन सभी समस्याओं के अतिरिक्त अन्य कई सारी समस्याएँ होंगी जिनका वो हँसकर सामना करते होंगे।

हम शहरी जीवन जिन वाले लोगों को सभी सुख सुविधाएँ प्राप्त होती हैं हमे कोनसी भी चीज़ के लिए मज़बूर नहीं होना पड़ता, बल्कि कभी - कभी बैठे - बिठाये हमारे काम पूरे हो जाते हैं। कभी - कभी ऐसा लगता है कि यहाँ सवाल गाँव और शहर नहीं बल्कि उच्चवर्ग और निम्नवर्ग के बीच का है। क्योंकि हम देखते है की जिसके पास पैसे होते हैं उनके कामों को पुरा होने में देर नहीं लगती, अगर वही कोई निम्नवर्ग का है और उसके पैसे नहीं है तो संभव ही नहीं की उसका काम वक्त पर हो। दुनिया में केवल आज पैसों को इंसानों से ज्यादा महत्व दिया जा रहा है। लोग आज मानवीयता भूल रहे हैं, स्वार्थी होते जा रहे हैं।

नाउशी गाँव में जब हम गए तो हमने अधिकांश लोगो से पूछा की गाँव में वे किस समस्याओं से गुजर रहे हैं, तो तब उन्होंने हमे बताया की उनके गाँव में बिजली हो, पानी की समस्या हो या नेटवर्क आदि की ऐसी कोई समस्या उन्हें नहीं है , केवल एक ऐसी बड़ी समस्या है जो उन्हें जीते जी मार रही है, उनकी तकलीफ़ें बढ़ा रही है और यदि इस समस्या का निवारण नहीं मिला तो यह नाउशी गाँव पुरा उद्वस्त हो जाएगा, भले ही उनके घर या वहाँ का गाँव विकसित हो फ़िर यह एक

समस्या उन्हें बर्बाद कर सकती है और यह जो एक बड़ी समस्या है वो है नाउशी गाँव में **मरीना बे परियोजना** का सफ़ल होना। सबसे पहले मरीना क्या है यह जानना जरूरी है। **मरीनर** का अर्थ होता है **नाविक** जो नाव चलता है और इस परियोजना को मरीना बे इसलिए नाम दिया गया क्योंकि वहाँ मछवारे नाव चलाते हैं।

मरीना बे यह परियोजना इसलिए हो रहा है क्योंकि वहाँ सरकार उस तट को भुजाकर वहाँ एक रिजॉर्ट बनाना चाहते हैं ताकि वह एक पर्यटक स्थल बन सके। नाउशी गाँव में अधिकांश मछवारे है और उनका कोई और व्यवसाय नहीं है। वे अपना घर वे इसी काम से चलाते हैं। यदि यह परियोजना गाँव में होती है तो सारे मछवारे बेरोजगार हो जायेंगे, और उन्हें अपना घर भी छोड़कर जाना होगा। सभी लोग इसी वजह से परेशान है की यह सफ़ल हुआ तो वे कही के नहीं रहेंगे, वे पूरे ख़तम हो जायेंगे।

जब हमने यह सब उनसे बातें सुनी, उनके तकलीफों को नजदीकी से समझा तब पता चला की वे किस स्थिति में जी रहे हैं। वे कहते हैं जिसे सब सुख सुविधाओं की आदत होती है उन्हें ये लोगों की परेशानी नहीं दिखती, लेकिन जब हम खुद यह सब अनुभव करते हैं तब हमे लोगों की स्थिति का अंदाजा होता है।

वो कहावत है ना **आगे खायी और पीछे कुँवा** ऐसी ही स्थिति उन गाँववालों की है। आगे यह मरीना बे और पीछे अल्दिया गोवा। उस गाँव में पीछे की ओर eke पहाड़ हुआ करता था और वहाँ कई सारे काजू के पेड़ भी हुआ करते थे लेकिन उस पहाड़ को उद्वस्त कर उस जमीन पर गैरकानूनी तरीके से रिजॉर्ट बनाया जा रहा है और वह धीरे - धीरे गाँव की ओर बढ़ रहा है। पहाड़ों से ही तो उस जगह की सुंदरता होती है और पर्यावरण भी दूषित नहीं होता।

लोगों से पूछने पर उन्होंने बताया की सबसे ज्यादा खतरा उन्हें मरीना बे इस परियोजना से है। अगर यही ना हो तो उनका जीवन अच्छे से अनंदपुर्वक बिते गा। हमे पूरे गाँव में ऐसा कोई नहीं मिला जो इस परियोजना से खुश हो। सभी ने इसका विरोध किया है। पुरा गाँव एक है इसलिए यह परियोजना सफ़ल नहीं हो पा रही है। और उनकी यही एकता एक दिन उन्हें विजय प्राप्त करा सकती है।

इस सर्वेक्षण के दौरान हम सभी को वहाँ के लोगों के मनोवृत्ति को हम जान पाये। जैसे उनके विचार कैसे हैं, वे क्या सोचते हैं वहाँ के समस्याओं के बारे में आदि। थोड़े लोग हमे जानकारी देने के लिए भी संकोच रहे थे। कई ने तो हमे सीधे मना कर दिया था कुछ भी बताने से। वे डर रहे थे की उन्होंने कुछ बताया तो कोई मुश्किल ना खड़ी हो जाए।

सांस्कृतिक परिवेश

गोवा में कई तरह के लोक संस्कृति , लोक त्यौहार होते है और हर एक की अपनी अपनी परंपरा, रीति रिवाज होते हैं। वैसे ही नाउशी गाँव में भी लोक त्यौहार मनाये जाते हैं जैसे की **जगोर, धालो, शिगमा, होली आदि।**

- **जगोर** :- जगोर के बारे में हमे जानकारी **वासु काणकोणकर** और **मिलिंद** ने बताया। जगोर रात को 10:30 बजे शुरू होता है और सुबह 8:30 बजे ख़तम होता है। कुल 68 गीत उसमें गाये जाते हैं। उनकी यह परंपरा है की जगोर में केवल पुरुष ही नाचते हैं और उनकी यह परंपरा है। वासु काणकोणकर वहाँ के जलमी है यानी कार्यक्रम की शुरुआत उनसे ही होती है। जोगार में वे अलग - अलग गीत गये जाते हैं। सभी भागवान के नाम लेकर यह किया जाता है उसे वे '**आदीवन**' कहते हैं। जगोर के पहले वहाँ एक खुरिस है वहाँ पहले उन्हें कुछ रिवाज करने पड़ते हैं फ़िर जाके वहाँ बाकी कार्यक्रम किये जाते हैं।

जगोर के गीत

आदीवन :- आदीवन बप्पा गा गणपती देवा
ब्रह्मदेव आनी विष्णु शंकरु ||2||
तिगूय मेळून गा एक दत्तगुरु ||2||
कृपा दिगा बाप्पा आदी अनंता ||3||
दत्तगुरु तुका नमन नमन , दत्तगुरु... .. .

- **धालो** :- गोवा में हर जगह धालो स्त्रियाँ खेलती हैं। परंतु इस गाँव में यह परंपरा है कि यहाँ स्त्रियों के जगह पुरुष धालो खेलते हैं। हमे यह कुछ नई बात थी जो पता चली। उस गाँव की यह रीत थी। यह 5 रातों तक धालो चलता है। धालो में सभी रामायण के गीत गए जाते हैं।

धालो के गीत

असल लंके चा रावण मदा मो माझला बा
असे ख्यापा जळी हाता खेका भिक्षारि गेला बा
अशी आम्ही खाता तांदुळ मुंगवा तुमास काय वाढू वा
अशी तांदुळा शिते आड़ जे अम्हा
असे सातवा करून सीता बाहेर सरली वा... ... ..

ऐसे गीत धालो खेलते वक्त गाये जाते हैं।

ORIGINAL

व्यवसाय एवं आर्थिक स्थिति

नाउशी में ज्यादातर लोग मछवारे हैं। वहाँ 80% लोग मछवारे और 20% लोग सरकारी काम करते हैं। वहाँ के एक - एक घर में 7-8 सदस्य रहते हैं और इसी कारण उनकी आर्थिक स्थिति भी कमज़ोर दिखायी देती है। जो सरकारी कर्मचारी उनके घर भी अच्छे हैं और उनके पास वह सभी सुख सुविधाएँ मौजूद हैं। परंतु जो मछवारे हैं उनकी जिंदगी तो इसी काम से चलती है। उस गाँव में कई ऐसे भी लोग हैं जिनके घर तो अच्छे हैं परंतु उनकी आर्थिक स्थिति सही नहीं है। पुरा का पुरा घर एक ही व्यक्ति से चलता है और उसमें घर में 7-8 सदस्यों का होना और भी मुश्किल हो जाता है।

मछवारे सुबह 7 बजे से अपना काम चालू करते हैं और फिर मछली लेकर बाज़ार जाते हैं ताकि कुछ बिके और उनको कुछ पैसे मिले जिससे वे अपना घर चला सके। कभी कभी तो उनकी हालत एकदम तंग हो जाती है। हमे पहले ऐसा लगता था की मछवारों की जिंदगी अच्छी होती है उनके पास पैसा बहुत होता है लेकिन जब गाँव के लोगों को देखा उनकी उनकी परिस्थितियों को करीब से जाना तब उनके तकलीफ़ों का एहसास हमे हुआ।

गाँव के लोगों की अपेक्षाएँ

जहाँ समस्या होती है वहाँ उस समस्या का समाधान भी होता है, और इस समाधान के साथ लोगों की अपेक्षाएँ भी जुड़ी हुई होती हैं। नाउशी गाँव के लोगों की भी कुछ अपेक्षाएँ हैं, उन्हें सरकार से कई सारी अपेक्षाएँ है की वे उन्हें हर बात में सहयोग दे, गाँव में मरीना बे यह परियोजना न हो और वे अच्छे से उसी गाँव में अपनी जिंदगी बिता सके। इस परियोजना के चलते उन गाँव के लोगों को शायद अपना घर छोड़ना पड़े, लेकिन वे सब यह नहीं चाहते। जिस घर में अपनी पूरी जिंदगी हम बिताते हैं उसे ऐसे छोड़कर जाना संभव नहीं होता। लोगों की केवल इतनी अपेक्षा है की सरकार ने इन सब बातों पर ध्यान देना चाहिए।

बाकी जो सरकारी कर्मचारी है उन्हें उतनी तकलीफ नहीं होगी जितनी की मछवारों को होगी। हमे बहुत बुरा लगा जब हमने यह सब उनसे सुना।

किसी से कोई भी अपेक्षा रखना कोई बुरी बात नहीं होती। जो हमे मदत करता है हम उसी से अपेक्षा रखते हैं और इसलिए यह गाँव वाले भी गलत नहीं है। उनकी अपेक्षा सरकार से सही है। सरकार होती ही है जनता की सेवा के लिए अगर वही ना हो तो लोगों का विश्वास सरकार पर से उठ जायेगा।

वे चाहते हैं की अगर उन्हें यह परियोजना सफ़ल करना है तो उन्हें वादा चाहिए की वे उन्हें नौकरी दें नहीं तो वे ये होने नहीं देंगे।

निष्कर्ष

इस तरह हमने नाउशी गाँव का सर्वेक्षण पूरा किया। इस सर्वेक्षण के दौरान हमे बहुत सी चीजें देखने और उसे समझ ने का हमे मौका मिला। वहाँ के लोकसंस्कृति के बारे में बहुत सारी जानकारी प्राप्त हुई, कुछ नई बातें जानने का मौका हमे मिला। जब हमने प्रत्यक्ष रूप में जब उनकी परिस्थिति को देखा तब हमे पता चला की सभी लोगों का जीवन आसान नहीं होता। हर एक के जीवन में संघर्ष होता ही है। और उन लोगों से एक बात सीखने जैसी थी की वे हर एक मुसिबतों का सामना डटकर बिना किसी भय के साथ करते हैं। और जितने भी लोगों से मिले वे सभी बड़े प्यारे थे हमे पुरा सहयोग उनसे प्राप्त हुआ। इस सर्वेक्षण से हमे बहुत कुछ सीखने को और अनुभवने को मिला।